# चार पावन-धाम

- अब से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले सनातन धर्म की एक-जुटता के उद्देश्य से आदि शंकराचार्य जी (509 – 477 BCE) ने भारतवर्ष के चार कोनों में स्थित चार तीर्थ-स्थलों को "चार पावन-धाम" (four holy abodes) की संज्ञा दी थी।
- इन चार पावन-धामों के नाम, स्थान तथा वहां स्थित मुख्य मंदिर इस प्रकार हैं -

**1. बद्रीनाथ धाम :**

- बद्रीनाथ धाम भारत के उत्तरी भाग में उत्तराखंड राज्य के बद्रीनाथ शहर में है।
- इस धाम का मुख्य मंदिर है – बद्रीनाथ (या बद्री-नारायण) का मंदिर, जो अलकनंदा के तट पर स्थित है।
- यह मंदिर भगवान् विष्णु के बद्रीनाथ (या बद्री-नारायण) रूप को समर्पित है।

**2. जगन्नाथ पुरी धाम :**

- जगन्नाथ पुरी धाम भारत के पूर्वी भाग में उड़ीसा राज्य के पुरी शहर में है।
- इस धाम का मुख्य मंदिर है – जगन्नाथ मंदिर, जो समुद्र के तट पर स्थित है।
- यह मंदिर भगवान् जगन्नाथ (भगवान् श्रीकृष्ण ), बलभद्र (श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम) और उनकी छोटी बहिन सुभद्रा को समर्पित है।

**3. द्वारका धाम :**

- द्वारका धाम भारत के पश्चिमी भाग में गुजरात राज्य के द्वारका शहर में है।
- इस धाम का मुख्य मंदिर है – द्वारकाधीश मंदिर, जो समुद्र के तट पर स्थित है।
- यह मंदिर द्वारकाधीश भगवान् श्रीकृष्ण को समर्पित है।

**4. रामेश्वर धाम :**

- रामेश्वर धाम भारत के दक्षिणी छोर पर तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् शहर में है।
- इस धाम का मुख्य मंदिर है – रामनाथ मंदिर, जो हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरे शंख के आकार के एक टापू पर स्थित है।
- यह मंदिर रामनाथ स्वामी (भगवान् शिव) को समर्पित है, जो स्वयं श्रीराम द्वारा स्थापित एक बड़े शिवलिंग के रूप में विद्यमान हैं।
- **यह शिवलिंग 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।**

- सत्ययुग का धाम बद्रीनाथ, त्रेता युग का रामेश्वर, द्वापर युग का द्वारका धाम और कलियुग का धाम जगन्नाथ पुरी माना जाता है, क्योंकि –
  - **सत्ययुग में** भगवान् विष्णु ने नर-नारायण अवतार लिया। नारायण भगवान् ने बेरों के जंगल, बद्रिका-वन (संस्कृत में बेर को बद्री कहते हैं), में तपस्या की। ऐसी मान्यता है कि स्वयं माता लक्ष्मी ने नारायण भगवान् को धूप और वर्षा से बचाने के लिए उस बेर (बद्री) के वृक्ष का रूप धारण किया था जिसके

नीचे वे तपस्या कर रहे थे। वह तपस्या स्थली बाद में बद्री-नारायण (बद्री के नारायण) और बद्री-नाथ (बद्री के नाथ) नामक तीर्थ के रूप में जानी गई।

- **त्रेता युग में** भगवान् श्रीराम ने लंका प्रस्थान करने से पूर्व भारत के दक्षिणी छोर में समुद्र तट पर शिव लिंग की स्थापना कर उसकी पूजा की और भगवान् शिव से लंका-विजय का आशीर्वाद प्राप्त किया था। यही स्थान बाद में रामेश्वर (राम के ईश्वर) नाम का तीर्थ बन गया।
- **द्वापुर युग में** भगवान् श्री कृष्ण ने अपने जन्म-स्थान मथुरा को छोड़ द्वारका नगरी को अपना निवास स्थान बनाया था।
- जगन्नाथ पुरी में भगवान् विष्णु की पूजा भगवान् जगन्नाथ के रूप में इस मान्यता के साथ की जाती है कि यह भगवान् विष्णु का **कलियुग के लिए अवतार** है।

- प्रत्येक सनातन-धर्मी की आंतरिक इच्छा रहती है कि वह अपने जीवन काल में कम से कम एक बार चारों धाम की यात्रा अवश्य कर ले।
- चारों धाम की यात्रा केवल धार्मिक दृष्टि से ही संतोष एवं प्रसन्नता देने वाली नहीं है, अपितु इन धामों के अति सुन्दर एवं शांत वातावरण का संसर्ग अपने-आप में जीवन का एक अनूठा अनुभव होता है।